RNI NO. : MPHIN33094

अंक 42

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशन का गौरवमयी 11वाँ वर्ष

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

बोलते चित्र

TRUTH OF LIFE

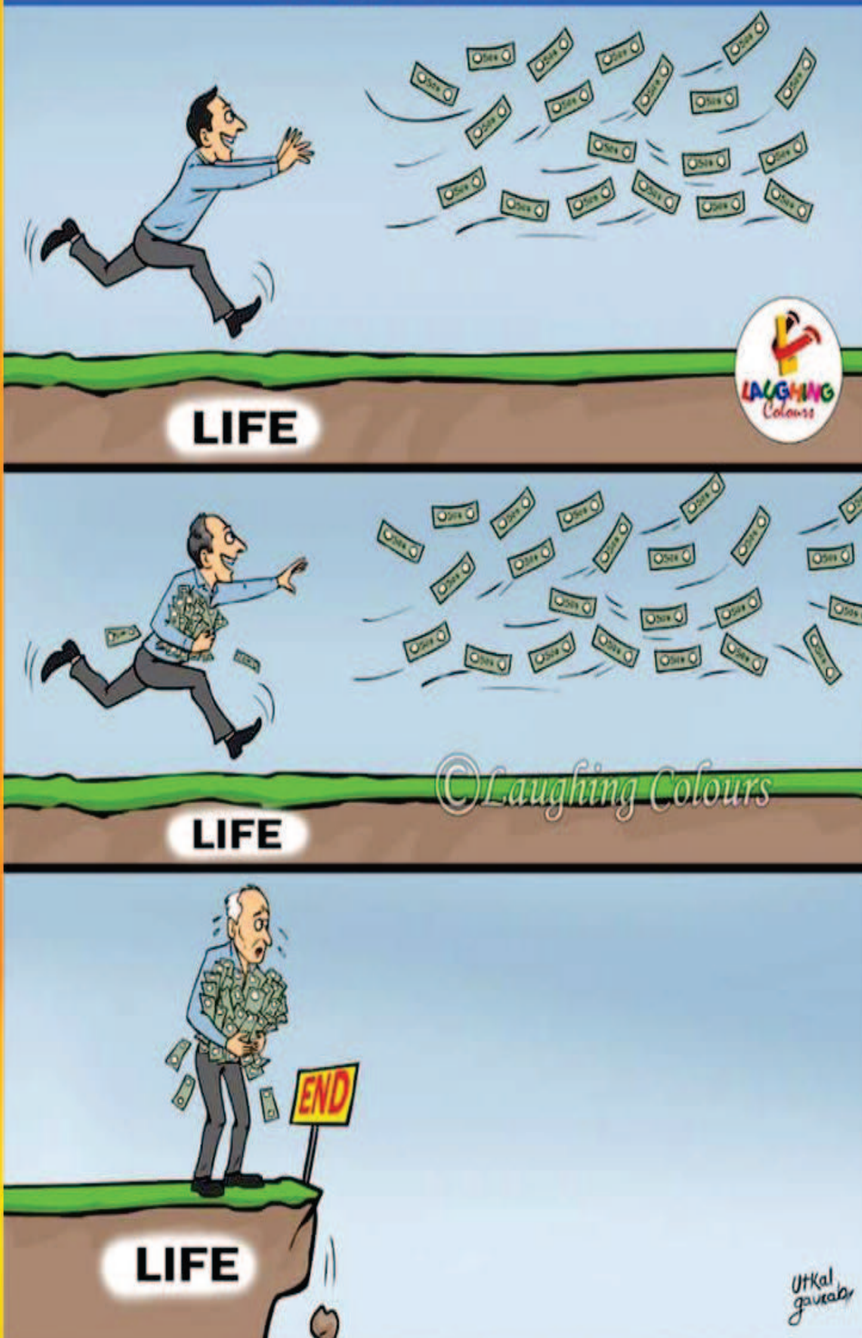

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका
चहकती चेतना

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई
संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.
संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर
प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर
डिजाइन/ ग्राफिक्स
गुरूदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमशिरोमणि संरक्षक
श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर
परमसंरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा
श्रीमती आरती जैन, कानपुर
संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
''चहकती चेतना''
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 09373294684
chehaktichetna@yahoo.com

क्र.	विषय	पेज
1.	सूची	1
2.	संपादकीय	2
3.	श्रीलंका में जैन धर्म	3
4.	धीमे जहर में ठंडक	4
5.	प्रेरक प्रसंग	5
6.	व्रती सियार	6
7.	कुभोग भूमि का परिचय	7
8.	उधार के रूपये	8
9.	सिद्धक्षेत्र पावागिरि	9
10.	सप्त व्यसन	10
11.	प्लास्टिक सर्जरी	11
12.	शरीर के लिये	12
13.	सौंदर्य कितना घातक	13
14.	जिम्मेदार कौन	14
15.	पानी बचाईये	15
16.	धार्मिक खेल	16–17
17.	मुनिराज का परिचय	18
18.	कहानी लिखो प्रतियोगिता	19
19.	कर्मोदय	20
20.	दोहरा मापदंड	21
21.	नोटो के फेर में	22
22.	जन्मदिवस	23
23.	विचारिये	24
24.	जैनों का इतिहास	25–26
25.	मोबाईल से हानि	27
26.	गेजेट्स	28
27.	समाचार	29–32

सदस्यता शुल्क - 400 रु. (तीन वर्ष हेतु)
1200 रु. (दस वर्ष हेतु)

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप ''चहकती चेतना'' के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से ''चहकती चेतना'' के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

सम्पादकीय

अंकों से मत नापिये अक्ल

प्यारे बच्चों,

सभी को स्नेह भरा जय जिनेन्द्र। आपकी परीक्षायें समाप्त हो गईं होंगी और कई कक्षाओं के परीक्षा परिणाम भी गये होंगे और आप सभी अगली कक्षा में जाने की तैयारी में होंगे। पर छुट्टियों में थोड़ा समय अपने प्यारे जैन धर्म को समझने के लिये निकालना। प्रतिदिन जिनमंदिर जाना, जिनेन्द्र पूजन करना, पाठशाला जाना और आपके आसपास कहीं बाल संस्कार शिविर लग रहा हो तो वहाँ अवश्य जाना। अधिकांश बच्चे समर केम्प में जाकर डांस, स्केटिंग, स्वीमिंग, संगीत, केलेग्राफी, अबेकस आदि सीखते हैं। पर बच्चो ! ये सब कलायें तो इसी जीवन के लिये काम आयेंगी और शायद न भी आयें। परन्तु परम सुखी होने की कला तो जैन धर्म को समझकर ही आ सकती है इससे आपका यह जीवन तो सुखमय रहेगा ही साथ ही आगामी भव मुक्ति के संस्कार लेकर जायेंगे।

अब कुछ बातें माता-पिताओं से - हर माता-पिता की तरह आप भी चाहते होंगे कि मेरा बच्चा कक्षा में फर्स्ट आये उसे अच्छे नम्बर मिलें, डांस, संगीत या खेलकूद में हमेशा टॉप पर रहे। क्या अच्छे नम्बर आना ही योग्यता की एक मात्र निशानी है ? अच्छे प्रदर्शन का दबाब, डांटना, दूसरों से तुलना आदि अनेक कारणों से बच्चे तनाव नहीं झेल पाते और वे टूट जाते हैं। उनका स्वाभाविक विकास रुक जाता है। आप उसे नालायक, असफल, बेवकूफ आदि नये नामों से पुकारने लगते हैं। अरब देशों में ऊंटों की दौड़ बहुत प्रसिद्ध है। इसके लिये वे छोटे बच्चों को ऊंटों के पीठ पर बांध देते हैं और ऊंट को तेजी से दौड़ाते हैं। इस चक्कर में बच्चे डर से कांपते हैं, रोते हैं और उन्हें चोट भी लग जाती है। जीतने वाले बच्चे को नई दौड़ के लिये तैयार किया जाता है। हमारी शिक्षा प्रणाली भी इसी तरह की है और शायद यह दौड़ जीवन में किसी न किसी रूप में चलती रहती है।

शिक्षा नगरी कोटा में पढ़ाई के तनाव में सन् 2016 में लगभग 60 छात्र-छात्राओं ने आत्महत्या कर ली। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 2014 में भारत में पढ़ाई और उसके रिजल्ट के तनाव में 15 से 16 वर्ष के 2471 छात्र-छात्राओं ने आत्महत्या की। जीवन में सफलता मिलती है अपनी बुद्धिमानी से। इसमें कड़ी मेहनत और लगन का भी योगदान होता है।बच्चों को अपनी मंजिल और रास्ते स्वयं तय करने दें और आप उन्हें सही सलाह, उचित मार्गदर्शन और अपना संरक्षण प्रदान करें।

अंकों के कम आने पर उसका कारण खोजें। उसके जीवन की कोई बड़ी कमजोरी को दूर करने का प्रयास करें। कहावत है - माता पिता आठ वर्ष तक प्यार से पालन करें और पन्द्रह वर्ष तक उसे प्यार के साथ अनुशासन में रखें और उसके बाद उससे मित्र की तरह व्यवहार करें और धार्मिक दृष्टिकोण से कहा जाये तो जो जो देखी वीतराग ने सो सो होसी वीरा रे। हर व्यक्ति का भविष्य निश्चित है। संयोग सारे उदयाधीन हैं। फिर क्यों न इस मंगल मनुष्य जीवन को आनन्द से जिया जाये।

इतिहास के झरोखे से -

श्रीलंका में जैन धर्म

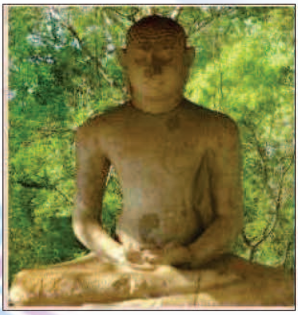

भारत और श्रीलंका के सांस्कृतिक सम्बन्ध सदियों पुराने हैं। श्रीलंका को सिंहल द्वीप भी कहा जाता है। पहले यहाँ जैन धर्म का बहुत प्रचार था। बौद्ध ग्रन्थ महावंश में उल्लेख है कि राजा पांडुकामय ने चौथी सदी में अपनी राजधानी अनुराधापुर में दो दिगम्बर मुनिराजों के लिये कुछ स्मारक और एक मन्दिर बनवाया था। कुछ सालों बाद ये बौद्ध संघाराम बना दिये गये। जैन मुनि यशाकीर्ति ने सिंहल द्वीप जाकर जैन धर्म का प्रचार किया था। बौद्ध साहित्य में लिखा है कि जैन श्रावक समुद्र पारकर जाते थे। सन् 430 में जब अनुराधापुर बसाया गया तब जैन श्रावक यहाँ रहते थे। सम्राट चक्रवर्ती भरत ने इस द्वीप पर विजय प्राप्त करके यहाँ जैन धर्म और श्रमण संस्कृति का प्रचार किया था। रामायण काल में यहाँ का राजा महापराक्रमी रावण जैन सम्राट था। बाईसवें तीर्थंकर नेमिनाथ का यहाँ विहार हुआ था।

मौर्य सम्राट सम्प्रति और जैन सम्राट खारवेल ने श्रीलंका में दिगम्बर मुनियों को प्रचार के लिये भेजा था। क्रौंच द्वीप, सिंहलद्वीप और इंस द्वीप में जैन तीर्थंकर सुमतिनाथ की पादुकायें थीं। पारकर और कासह्रद में भगवान आदिनाथ की जिनप्रतिमायें थीं।

सुप्रसिद्ध इतिहासकार फर्ग्यूसन ने लिखा है कि कुछ यूरोपियन लोगों ने श्रीलंका में सात और तीन फणों वाली जिनेन्द्र प्रतिमाओं के फोटो लिये थे। ये प्रतिमायें संभवतः भगवान पार्श्वनाथ की थीं। श्रीलंका के प्राचीन साहित्य और अन्य प्रमाणों से ज्ञात होता है कि खल्लाटंगा के शासनकाल में अभयगिरि स्थित जैन मठ और विहार विशेष लोकप्रिय थे। राजा वट्टगामिनी के शासन काल के पूर्व जैन मठ के मुनि श्रीगिरि का विशेष प्रभाव था। श्रीलंका के सिगिरिया प्रदेश के अभयगिरि में एक विशाल जैन मंदिर था।

साथ ही अनेक प्रमाण श्रीलंका में जैन धर्म होने के पुष्टि करते हैं। अभी मार्च माह में भारत की जैन संस्थाओं ने श्रीलंका में ही श्रीलंका में जैन धर्म विषय पर एक सेमिनार आयोजित किया जिसमें अनेक विद्वानों के साथ बड़ी संख्या में अन्य लोगों ने लाभ लिया।

हमारे तीर्थ क्षेत्र

सिद्धक्षेत्र पावागिरिजी

उत्तरप्रदेश प्रान्त के ललितपुर जिले के तालबेहट तहसील के पवा ग्राम में स्थित पावागिरि सिद्धक्षेत्र अत्यंत रमणीय प्राकृतिक स्थान है। इस स्थान से स्वर्णभद्र आदि मुनिराजों ने निर्वाण पद प्राप्त किया था। यहाँ तलहटी में विशाल मंदिर हैं। इनमें चौबीसी जिनालय, भगवान बाहुबली मंदिर, मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ जिनालय हैं। साथ 800 वर्ष पूर्व देवपत-खेवपत द्वारा निर्मित प्राचीन गुफा के जिनमंदिर में 6 प्रतिमायें विराजमान हैं। एक भव्य मानस्तंभ भी यहाँ दर्शनीय है।

यहाँ एक लघु पहाड़ है जहाँ पर जिनमंदिर के जिनबिम्ब दर्शनीय हैं साथ ही यहाँ स्वर्णभद्र आदि चार मुनिराजों की खड्गासान प्रतिमाये एवं चरण चिन्ह हैं।

निर्वाण काण्ड की ये पक्तियाँ क्षेत्र का महत्व बताती हैं-

सुवरणभद्र आदि मुनि चार, पावागिरि वर शिखर मंझार।
चेलना नदी तीर के पास, मुक्ति गये वन्दों नित तास।।

पावागिरि से 2 किमी की दूरी पर पवा ग्राम के जिनमंदिर भी दर्शनीय हैं।

यहाँ आवास एवं भोजन की स्थायी सुविधा उपलब्ध है। पावागिरि झांसी से 50 किमी, ललितपुर से 50 किमी है। इसके अतिरिक्त इसके पास स्थित बुन्देखण्ड के अनेक तीर्थ की वन्दना अवश्य करने योग्य है।

पावागिरि का सम्पर्क सूत्र - 993762685, 9415590646

व्यवहार सीखो

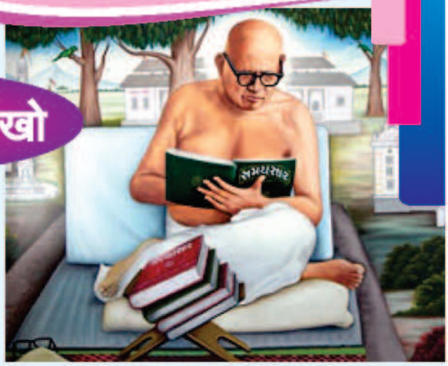

एक श्रोता सोनगढ़ में गुरुदेवश्री के प्रवचन सुनने नियमित जाता था। उसके पिता को पथरी की बीमारी हो गई, उन्हें बहुत तकलीफ थी। परन्तु वह प्रवचन सुनने के लोभ से पिताजी की सेवा नहीं करता था। जब कोई उसे टोकता था तो वह लोगों से कहता कि सब द्रव्य स्वतंत्र हैं, एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कुछ नहीं कर सकता। गुरुदेवश्री को जब यह बात मालूम चली तो उन्होंने भरी सभा में उस व्यक्ति को खड़ा किया और कहा तुम अभी यहाँ से चले जाओ और पिताजी की सेवा करो। वह जीते जागते भगवान हैं।

कहानी तीन मित्रों की

ज्ञान, धन और विश्वास तीनों बहुत अच्छे मित्र थे। तीनों में बहुत स्नेह था। एक बार ऐसा समय आया कि तीनों को अलग होना पड़ा तब तीनों ने एक दूसरे से प्रश्न किया कि हम कहाँ मिलेंगे ?

ज्ञान बोला - मैं मन्दिर, स्वाध्याय भवनों, विद्यालयों में मिलूँगा।

धन बोला - मैं धनवानों के पास मिलूँगा।

विश्वास चुप रहा तो दोनों मित्रों ने उसके चुप रहने का कारण पूछा तो विश्वास ने बहुत शांति से कहा - मैं एक बार चला गया तो फिर कभी नहीं मिलूँगा।

एक लोटा पानी

महात्मा गांधी एक बार इलाहाबाद गये। जवाहरलाल नेहरु ने उनके स्वागत की सारी व्यवस्था कर रहे थे क्योंकि वे नेहरुजी के घर आनंद भवन में ही ठहरे थे। नेहरुजी ने सुबह उनके मुंह-हाथ धोने के लिये एक लोटा पानी लाकर रख दिया। अचानक पानी का लोटा उठाते समय लोटा उनके हाथ से छूट गया और वे इस बात पर नेहरुजी से दुःख व्यक्त करने लगे। तब नेहरुजी ने कहा - बापू! आप इलाहाबाद में हैं, यह संगम की नगरी है। यहाँ पानी की कोई कमी नहीं है। आप एक लोटे पानी का दुःख व्यर्थ ही कर रहे हैं। दूसरा मंगवा देता हूँ। इस बापू ने कहा - यहाँ बहुत पानी है इसका मतलब यह नहीं है कि सब मेरा है। हम सबको अपने हिस्से का पानी प्रयोग करना चाहिये, दूसरे का नहीं।

धीमे जहर से ठंडक का एहसास

गर्मी के मौसम में गर्मी और प्यास लगते ही लोग तुरन्त ही कोका कोला, पेप्सी आदि कोल्ड ड्रिंक्स पीने लगते हैं और तुरन्त ठंडक का अनुभव होता है। आप स्वयं और घर पर आने वाले मेहमानों को भी थम्स अप, मिरिण्डा, कोकाकोला आदि धीमा जहर देकर खुश होते हैं।

सेक्टर फॉर साइंस एण्ड एनवायरमेण्ट की एक रिसर्च रिपोर्ट के अनुसार सभी बड़े ब्राण्डों के कोल्ड ड्रिंक्स की जांच की गई। इसके अनुसार इनमें डी डी टी लिण्डेन, मैथिलियान क्लोरापारीफास पाये गये। ये सभी केमिकल जहरीले कीटनाशक के रूप में किसानों द्वारा प्रयोग किया जाते हैं। सभी कम्पनियों द्वारा कोल्ड ड्रिंक्स बनाने का फार्मूला बहुत गोपनीय रखा जाता है और मात्र डिस्टिलरों को ही कम्पनी द्वारा दिया जाता है। कोल्ड ड्रिंक्स की स्वाद को बनाये रखने के लिये कैफीन और मिठास के लिये ऐस्परटेम नाम का केमिकल मिलाया जाता है। एस्परटेम सेक्रीन से 200 गुना मीठा होता है। कोल्डड्रिंक्स में कीटाणु पैदा होने से रोकने के लिये कार्बन डाय आक्साईड मिलाया जाता है। इसके दो काम होते हैं - कीटाणु पैदा होने से रोकना और पीने के बाद ठंडक का एहसास होना। साथ प्रिजर्वेटिव के रूप में प्रोटेशियम, सोर्बिटेट सोडियम बैंजाएट पेक्टिन एल्जीनेट आदि शरीर को हानि पहुँचाने वाले रसायन डाले जाते हैं। कोल्डड्रिंक्स को सूखने से बचाने के लिये चर्बी वाला ग्लिसरीन मिलाया जाता है। इसके अतिरिक्त अनेक रसायन मिलाये जाते हैं जो कि शरीर के लिये घातक धीमे जहर का कार्य करते हैं।

बोस्टन के हावर्ड स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ के विशेषज्ञों के शोध के अनुसार कोका कोला पीने से हड्डियों कमजोर होतीं हैं। इसके अधिक प्रयोग से लड़कियों की हड्डियाँ तेजी से कमज़ोर होती हैं। इसका कारण फास्फेट की मात्रा अधिक होना है।

इसके अतिरिक्त कोल्ड ड्रिंक्स अम्ल, कैंसर, हृदय रोग, ब्रेन हेमरेज जैसे रोगों का भी कारण हो सकते हैं।

हमारे पास अनेक शोध की विस्तृत रिपोर्ट हमारे पास उपलब्ध है। परन्तु यहाँ उसे प्रकाशित करना सम्भव नहीं है। बस इतना समझ लीजिये - यदि आप अपने और अपने परिवार से प्रेम करते हैं तो बाजार के कोल्ड ड्रिंक्स से दूर रहिये।

सलाह हमारी और निर्णय आपका।

कथा पढ़ो पुराण की -

व्रती सियार

जंगल में एक मुनिराज तप करते थे। एक दिन नगर के साधर्मी मुनिराज के दर्शन और पूजन करने के लिये आये। उसी समय एक सियार मुनिराज के पास बैठा था। वह बहुत दिन से भूखा था। लोगों के आने की आवाज सुनकर उसे लगा कि आज उसे कुछ खाने को मिलेगा। सभी लोग मुनिराज के उपदेश को ध्यान से सुन रहे थे। सियार सभी को ध्यान से देख रहा था। ऐसा लग रहा था कि पूर्व भव के संस्कार से सियार मुनिराज के उपदेश को पूरी तरह समझ रहा है। मुनिराज पाँच पाप के त्याग का उपदेश दे रहे थे। थोड़ी देर बाद सभी साधर्मी अपनी शक्ति अनुसार कोई न कोई नियम लेकर चले गये। सियार ने भी पूर्व संस्कार से और मुनिराज को देखकर अपने मन में ही रात्रि भोजन का त्याग कर दिया।

एक दिन उसे बहुत प्यास लगी। प्यास से व्याकुल होकर पानी ढूंढने लगा। उसे एक स्थान पर एक गहरा कुंआ दिखा। वह सियार पानी पीने के लिये गहरे कुंये में उतर गया। कुंये में नीचे बहुत पेड़ थे, उनकी छाया के कारण वहाँ बहुत अंधेरा था। सियार का रात्रि में भोजन-पानी का त्याग था। वह रात्रि समझकर ऊपर आ गया परन्तु ऊपर प्रकाश था। वह प्यास के कारण वापस कुंये में नीचे गया परन्तु वहाँ अंधेरा था। नीचे प्रकाश आने की प्रतीक्षा करता हुआ वह नीचे ही बैठ गया। प्यास के कारण उसकी मृत्यु हो गई।

नियम का पूरा पालन करने का कारण उस सियार ने राजा के यहाँ राजकुमार के रुप में जन्म लिया और उसका नाम प्रीतिंकर रखा गया। प्रीतिंकर राजकुमार अपने पिता के पश्चात् राजा बना और उसने न्याय-नीति से शासन किया और वृद्धावस्था आने पर उसने मुनि दीक्षा धारण की और सकल कर्म को नाशकर अरहंत पद प्राप्त किया और बाद में सिद्ध पद प्राप्त अनंत काल के सुख में लीन हो गये।

देखा आपने, नियम पालने का फल....।

जाने करणानुयोग से-

कुभोग भूमि का परिचय

लोक में जीवों के निवास स्थान को भूमि कहते हैं।

- नरकों की सात भूमियों के अतिरिक्त सात नरकों के नीचे निगोदिया जीवों की निवास भूमि कलकल नाम की आठवीं पृथ्वी है। यह एक राजू प्रमाण है।
- इसके अतिरिक्त उर्ध्व लोक के अंत में मुक्त जीवों की आवास भूमि को ईषत् - प्राग्भार नामक की भूमि को अष्टम भूमि कहा जाता है।
- मध्य लोक में मनुष्यों ओर तिर्यन्चों की निवास भूमियों को कर्म भूमि, भोगभूमि और कुभोग भूमि कहा जाता है।
- भोगभूमि - जहाँ कल्पवृक्षों से प्राप्त भोग-उपभोग की सामग्री के द्वारा मनुष्यों का जीवन चलता है उसे भोगभूमि कहते हैं।
- भोगभूमि में रहने वाले जीवों को भोगभूमिज मनुष्य कहते हैं।
- भोग भूमि में युगल संतान जन्म लेती हैं जिन्हें युगलिया कहते हैं। जघन्य भोग भूमि में जन्म के बाद 7 सप्ताह में ही, मध्यम भोगभूमि में 35 दिन में और उत्तम भूमि में 21 दिन में ये युवा हो जाते हैं। ये पति-पत्नी के रूप में सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं। भोग भूमि में रात-दिन का भेद नहीं होता। शीत-गर्मी नहीं होती। यहाँ धूल, कीचड़, कंकड़, पत्थर और प्राकृतिक आपदायें नहीं होतीं।
- यहाँ जन्म लेने वाले मनुष्य और तिर्यन्च सुखी, निरोगी और मृदु स्वभावी होते हैं। परन्तु संयम न होने के कारण इन्हें मोक्ष नहीं होता।
- सुपात्र को दान देने के फल में ही यहाँ जन्म होता है।
- यहाँ युगल ही मरण होता है। पुरुष को छींक और स्त्री को जंभाई आते ही मरण हो जाता है और शरीर कपूर की तरह उड़ जाता है। माता-पिता, संतान का और संतान, माता-पिता का मुख नहीं देख पाते हैं क्योंकि जन्म देने के साथ ही माता-पिता का मरण हो जाता है।
- लवण समुद्र और कालोदधि समुद्र के दोनों किनारों पर 96 कुभोगभूमियों की रचना है।
- इनमें रहने वाले मनुष्यों को भोग भूमिज, कुमानुष या अन्तर्दीपज कहते हैं, इनकी आकृतियाँ विकृत होती हैं। जैसे- लम्बे कान वाले, एक पैर वाले, सींग-पूंछ वाले, पशुओं के समान चेहरे वाले आदि।
- यहाँ युगल एक साथ दो बच्चे ही जन्म लेते हैं और साथ ही मरते हैं।
- यहाँ कल्पवृक्ष नहीं होते।
- यहाँ के मनुष्य मिट्टी खाते हैं और वृक्षों के नीचे रहने वाले फल-फूल खाकर अपना जीवन यापन करते हैं।
- यहाँ उत्पन्न होने वाले जीवों को मोक्ष प्राप्त नहीं होता।
- यहाँ के सम्यग्दृष्टि जीव मरकर सौधर्म और ईशान स्वर्गों में तथा मिथ्यादृष्टि जीव मरकर भवनवासी, ज्योतिषी, व्यंतर में जन्म लेते हैं।

उधार के रुपये

एक सेठजी बहुत दयालु थे। धार्मिक कार्यों और परोपकार में सदा आगे रहते थे। उनके पास कोई व्यक्ति रुपये उधार मांगने आता था तो उसके वे मना नहीं करते थे। वे मुनीम को बुलाते और उधार मांगने वाले से पूछते कि तुम रुपये कब लौटाओगे ? इस जन्म में या अगले जन्म में ।जो लोग ईमानदार होते, वे कहते इसी जन्म में और जो लोग बेईमान होते वे कहते अगले जन्म में। कई चतुर लोग बहुत खुश होते कि अच्छा सेठ है, अगले जन्म में उधार वापस पाने की उम्मीद लेकर बैठा है। मुनीम भी किसी से नहीं पूछता जो जिस जन्म की बात कहता वह बहीखाते में उसका नाम लिखकर उस जन्म में वापस करने की बात लिख देता था।

एक चोर को यह बात मालूम चली तो वह सेठ से उधार मांगने चला गया। उसे मालूम हो गया कि सेठ अगले जन्म तक के लिये उधार देता है। चोर का असली उद्देश्य तो सेठ की तिजोरी देखना था जिससे वह समय देखकर चोरी कर सके। चोर सेठ के पास पहुँचा और रुपये उधार मांगे। मुनीम ने सदा की तरह उससे भी पूछा कि भाई ! ये रुपये कब वापस करोगे? चोर बोला - अगले जन्म में। मुनीम ने चोर का नाम लिखकर तिजोरी से पैसे निकालकर दे दिये। उसी समय चोर ने तिजोरी देख ली। चोर ने निश्चय किया कि रात होने पर तिजोरी खोलकर सारा रुपया चुरा लेगा। रात में वह सेठ के घर पहुँच गया और भैंसों के तबेले में छिपकर बैठ गया और सेठ के सोने का इन्तजार करने लगा। अचानक चोर ने सुना कि दो भैंसें में बातें कर रहीं हैं। चोर भैंसों की भाषा समझता था उसने सुना कि एक भैंस दूसरी भैंस से कह रही थी - तुम तो आज ही आई हो ना बहन! दूसरी भैंस ने कहा - हाँ बहन! आज ही सेठ के तबेले में आई हूँ और तुम कब से यहाँ हो ? पहली भैंस दुःखी होकर बोली - बहन! मैं तो तीन साल से यहाँ पर हूँ। मैंने पिछले जन्म में सेठ से रुपये उधार लिये थे और अगले जन्म में चुकाने का वादा किया था। मेरी मृत्यु हो गई और मरकर मैं भैंस बन गई और सेठ के तबेले में आ गई। अब दूध देकर उसका कर्ज चुका रही हूँ। जब तक कर्ज की राशि पूरी नहीं हो जाती तब तक यहीं रहना होगा।

चोर ने तबेले में बंधी दूसरी भैंसों को देखा और उसे सब समझ में आ गया कि लिया हुआ उधार तो चुकाना ही पड़ता है। वह तुरन्त अपने घर लौटा और सुबह होते ही सेठ से लिये गये रुपये लेकर वापस आया और मुनीम को देकर अपना नाम कटवा लिया।

जो जीव जैसे परिणाम करता है उसे वैसे फल भोगने ही पड़ते हैं।

सप्त व्यसन

छोड़ो-छोड़ो रे व्यसन, ये दुर्गति करन।
छोड़ो-छोड़ो रे जुआ, बर्बादी का ये कुंआ।
छोड़ो-छोड़ो रे शराब, करती बुद्धि को खराब।
छोड़ो-छोड़ो रे चोरी, तेरी जिन्दगी थोड़ी।
छोड़ो-छोड़ो मांस खाना, ये है रोगों का खजाना।
छोड़ो-छोड़ो रे शिकार, हिंसा कर्म दुःखकार।
छोड़ो-छोड़ो परनार, ये दुर्गति का द्वार।
छोड़ो-छोड़ो वेश्या संग, तब ही चढ़े धर्म का रंग।।

- बा.ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्'

जरुरी क्या !

जीभ का स्वाद या जीवन ....!

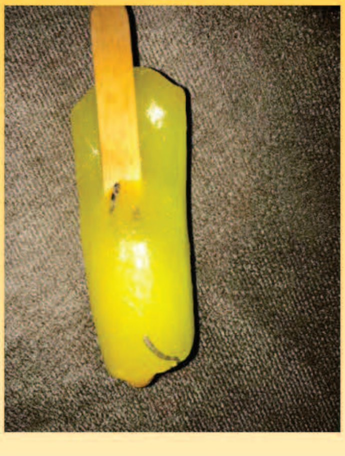

देखिये बाजार की आईक्रीम में निकली छिपकली

क्या ?

आप थाली में झूठन छोड़ते हैं
आप प्रदर्शन के लिये विवाह आदि
कार्यक्रमों में अनेक भोजन के
व्यंजन बनवाते हैं....

जरा इन चित्रों को देखकर विचार करें -

अपने पुण्य के उदय में मस्त मत होईये...

इसलिये जो नहीं है उसका रोना मत रोईये,
जो मिला है उसमें ही संतुष्ट हकर आराधना कीजिये ।
जो प्राप्त है वह पर्याप्त है ।

चहकती चेतना

प्लास्टिक सर्जरी
का प्रारम्भ भारत में ही

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि सर्जरी अंग प्रत्यारोपण एवं सामान्य शल्य चिकित्सा का उल्लेख हमारे धर्म ग्रन्थों में प्राप्त होता है।

यह प्रसंग कर्नाटक के बेलगांव जिले के सदलगा गांव से सम्बन्धित है। यह वही सदलगा गांव है जो वर्तमान के विख्यात संत आचार्य विद्यासागरजी का जन्म स्थान है।

यह घटना सन् 1780 से 1784 के बीच की है। उस समय दक्षिण भारत का साम्राज्य हैदर अली के पास था। अंग्रेजों ने हैदर अली पर आक्रमण कर उसके राज्य पर कब्जा करने की योजना बनाई पर कभी कामयाब नहीं हुये। एक बार हैदर अली ने आक्रमण करने वाले अंग्रेज अफसर कर्नल कूट को पकड़ लिया और उसकी नाक काट दी और उसकी कटी हुई नाक उसके हाथ में देकर घोड़े पर बिठाकर उसे वापस भेज दिया। कर्नल मुंह पर कपड़ा बांधकर चला जा रहा था तो वह रास्ते में सदलगा गांव में रुका। रास्ते में एक जैन वैद्य ने पूछा कि आपकी नाक को क्या हुआ है ? इस पर कर्नल चुप रहा। बहुत आग्रह करने पर कर्नल ने सारी घटना सुनाई। दयालु वैद्य ने कहा कि मैं आपकी नाक जोड़ सकता हूँ। आप मेरे घर चलिये। वैद्य ने उसकी नाक जोड़कर उसके ऊपर औषधि का लेप कर दिया। अंग्रेज को भरोसा नहीं हुआ। वह इंग्लैण्ड चला गया। लगभग 3 माह बाद उसकी नाक ज्यों की त्यों जुड़ गई।

उसने इस घटना का उल्लेख अपने साथियों से किया और उस जैन वैद्य को धन्यवाद दिया।

- डॉ. आशीष शास्त्री- - डॉ. अभिषेक शास्त्री, दमोह

तत्वजिज्ञासु मुमुक्षुओं के लिये आध्यात्मिक लाभ हेतु
स्वर्णपुरी सोनगढ़ में आवास की विशेष सुविधा

- पूज्य गुरुदेवश्री साधना भूमि अध्यात्मतीर्थ सोनगढ़ के आध्यात्मिक वातावरण का लाभ
- मुमुक्षु साधर्मियों हेतु चार फ्लेट उपलब्ध
- सभी फ्लेट एक बेडरूम (AC), हॉल, किचन और सम्पूर्ण फर्नीचर सहित
- फ्लेट की सुविधा लेने वाले साधर्मी को न्यूतनम 10 दिन और अधिकतम 1 माह तक आवास सुविधा
- इस सुविधा के लिये न्यूनतम मेन्टनेन्स शुल्क निर्धारित

फ्लेट स्थान : गुरुप्रभाव बिल्डिंग, भावनगर-पालीताणा रोड, सोनगढ़ (सौराष्ट्र)

आरक्षण हेतु हेतु सम्पर्क सूत्र – शैलेष शाह द्वारा श्री कुन्दकुन्द– कहान पारमार्थिक ट्रस्ट,
302, कृष्ण कुंज, वी.एल. मेहता मार्ग, HDFC बैंक के ऊपर,
विल पारला, वेस्ट, मुम्बई 56 फोन. 022.26104912, 26130820
E-mail : shailesh@vitragvani.com

शरीर के लिये ये सब.... आश्चर्य है

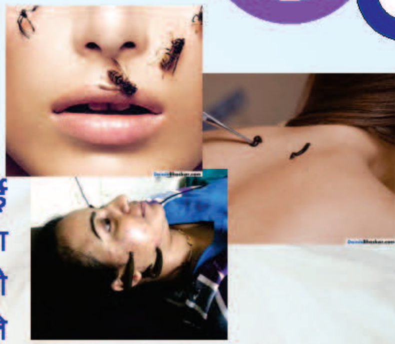

आज सभी सुन्दर दिखना चाहते हैं। कोई बूढ़ा नहीं होना चाहता। सभी को एक दिन मरना अवश्य है - इस शाश्वत सत्य को जानते हुये भी लम्बे समय तक जीवित और स्वस्थ जीवन चाहते हैं। जो शरीर नश्वर है, गलना जिसका स्वभाव है उसके लिये उन्हें चाहे कुछ भी करना पड़े उसके लिये तैयार रहते हैं। इसमें हिंसा-अहिंसा का विवेक भी समाप्त हो जाता है।

झुर्रियों से बचने के लिये - घोंघा (स्नेल) एक लिजलिजा और चिपचिपा जीव होता है। पश्चिमी देशों की लड़कियाँ अपने चेहरे पर घोंघे को छोड़ देतीं हैं। कहा जाता है कि घोंघा चलते समय एक लिक्विड छोड़ता है जिससे चेहरे स्किन सेल्स की मरम्मत होती जाती है और त्वजा ताजी बनी रहती है।

मधुमक्खी का डंक - कई देशों में लड़कियाँ मधुमक्खी से चेहरे कटवाती हैं। माना जाता है कि डंक से स्किन में कोलेजन प्रोटीन बढ़ता है जिससे स्किन में कसावट आती है।

बर्फ के चैंबर में - शरीर की तकलीफें दूर करने के लिये ये थेरेपी की जाती है। बर्फ से भरे चैंबर में माइनस 130 डिग्री में 3 मिनिट तक कम कपड़ों में बन्द होना पड़ता है। बाहर निकलने पर खून का प्रवाह बहुत धीमा हो जाता है फिर तेजी से बढ़ता है इससे शरीर में हैप्पी हॉर्मोन सेरेटोनिनि बनता है।

पक्षियों की बीट - कई देशों में पक्षियों की बीट को एकत्रित करके उसका फेशियल किया जाता है।

जोंक को चिपकाना - कुछ देशों में गंदा खून पीने के लिये जोंक को शरीर से चिपकाया जाता है ताकि शरीर में फोड़े/ फुंसी न हों।

इसके अलावा सुन्दर दिखने व जवान बने रहने के लिये लोग जो उपाय करते हैं आप उन्हें पढ़कर आश्चर्य चकित रह जायेंगे। उनका उल्लेख करना यहाँ मर्यादा के विरुद्ध है। जबकि सुन्दर दिखना और लम्बी आयु कर्म के अनूकूल उदय पर निर्भर हैं। जो कार्य हमारे हाथ में नहीं है उसके पीछे पागल होकर अपने जीवन का अमूल्य समय बरबाद कर रहे हैं। जिस देह के लिये पण्डित दौलतराम जी ने छहढ़ाला में कहा - नव द्वार बहैं

घिनकारी, असि देह करे किम यारी।।

शरीर के लिये ये सब.... आश्चर्य है

आज सभी सुन्दर दिखना चाहते हैं। कोई बूढ़ा नहीं होना चाहता। सभी को एक दिन मरना अवश्य है - इस शाश्वत सत्य को जानते हुये भी लम्बे समय तक जीवित और स्वस्थ जीवन चाहते हैं। जो शरीर नश्वर है, गलना जिसका स्वभाव है उसके लिये उन्हें चाहे कुछ भी करना पड़े उसके लिये तैयार रहते हैं। इसमें हिंसा-अहिंसा का विवेक भी समाप्त हो जाता है।

झुर्रियों से बचने के लिये - घोंघा (स्नेल) एक लिजलिजा और चिपचिपा जीव होता है। पश्चिमी देशों की लड़कियाँ अपने चेहरे पर घोंघे को छोड़ देतीं हैं। कहा जाता है कि घोंघा चलते समय एक लिक्विड छोड़ता है जिससे चेहरे स्किन सेल्स की मरम्मत होती जाती है और त्वजा ताजी बनी रहती है।

मधुमक्खी का डंक - कई देशों में लड़कियाँ मधुमक्खी से चेहरे कटवाती हैं। माना जाता है कि डंक से स्किन में कोलेजन प्रोटीन बढ़ता है जिससे स्किन में कसावट आती है।

बर्फ के चैंबर में - शरीर की तकलीफें दूर करने के लिये ये थेरेपी की जाती है। बर्फ से भरे चैंबर में माइनस 130 डिग्री में 3 मिनिट तक कम कपड़ों में बन्द होना पड़ता है। बाहर निकलने पर खून का प्रवाह बहुत धीमा हो जाता है फिर तेजी से बढ़ता है इससे शरीर में हैप्पी हॉर्मोन सेरेटोनिन बनता है।

पक्षियों की बीट - कई देशों में पक्षियों की बीट को एकत्रित करके उसका फेशियल किया जाता है।

जोंक को चिपकाना - कुछ देशों में गंदा खून पीने के लिये जोंक को शरीर से चिपकाया जाता है ताकि शरीर में फोड़े/ फुंसी न हों।

इसके अलावा सुन्दर दिखने व जवान बने रहने के लिये लोग जो उपाय करते हैं आप उन्हें पढ़कर आश्चर्य चकित रह जायेंगे। उनका उल्लेख करना यहाँ मर्यादा के विरुद्ध है। जबकि सुन्दर दिखना और लम्बी आयु कर्म के अनूकूल उदय पर निर्भर हैं। जो कार्य हमारे हाथ में नहीं है उसके पीछे पागल होकर अपने जीवन का अमूल्य समय बरबाद कर रहे हैं। जिस देह के लिये पण्डित दौलतराम जी ने छहढ़ाला में कहा - नव द्वार बहैं घिनकारी, असि देह करे किम यारी।।

पानी को तरसते 33 करोड़ लोग :

जिम्मेदार कौन ?

क्या आपकी कोई जिम्मेदारी नहीं है ?

गर्मी का मौसम प्रारम्भ हो गया है। एक ओर चुनाव जीतने की खुशी में अधिकांश लोगों को देश में राम राज्य दिख रहा है वहीं दूसरी ओर एक बाल्टी पानी के लिये भयंकर संघर्ष प्रारम्भ हो गया है। पानी को पानी की तरह बहाने का ही परिणाम है कि आज देश के 12 राज्यों के लोग एक-एक बूंद पानी को तरस रहे हैं। लगभग 33 करोड़ लोग हर रोज पानी की उम्मीद लगाये बैठे रहते हैं। आपको याद होगा कि पिछले वर्ष महाराष्ट्र के लातूर में ट्रेन से पानी भेजा गया था। झारखंड में 75 हजार कुंये थे जो अब मात्र 10 हजार बचे हैं। देश के 2 लाख 65 हजार गांव ऐसे हैं कि पीने का साफ पानी उपलब्ध नहीं है। पहले देश में 5 साल का पानी स्टॉक होता था और अब 1 साल का ही।

भले ही आपके घर में पानी की कोई कमी नहीं परन्तु पानी का सही उपयोग हम सबकी जिम्मेदारी है। अब एक ही रास्ता है - पानी चाहिये तो पानी बचाईये। देखिये इन चित्रों को पानी की भीषण समस्या की कहानी कह रहे हैं...

एक सोच ऐसी भी ..

मशहूर कार्टूनिस्ट और चित्रकार आबिद सुरती मुम्बई में रहते हैं। वे मुम्बई में लोगों के घर के टपकते हुये नलों को ठीक करते हुये देखे जा सकते हैं। एक-एक बूंद पानी बचाने के लिये उन्होंने "ड्राप डेड" नाम की संस्था बनाई है। जब कभी वे कहीं पानी बहता या टपकते हुये देखते हैं तो उन्हें बहुत बुरा लगता है।

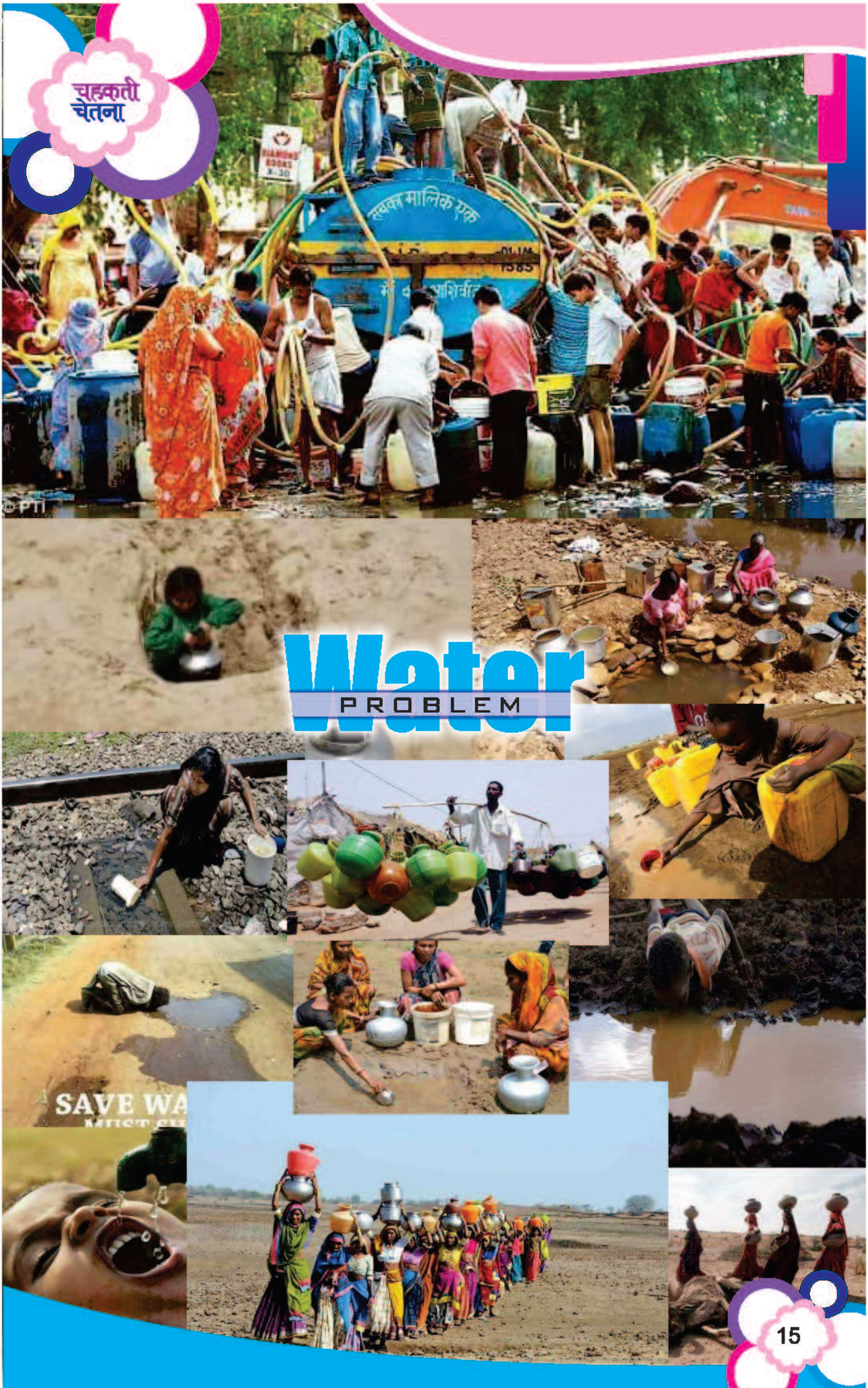
Water
PROBLEM
© PTI
SAVE WA

इनमें से किससे मुनिराज का कोई सम्बन्ध नहीं होता

भावना

मंदिरजी हम आयेंगे, पूजा पाठ रचायेंगे।
स्वाध्याय हम करेंगे, आतम वैभव जानेंगे।
स्वाध्याय हम करेंगे, भेद ज्ञान हम लहेंगे।
आत्म ध्यान फिर करेंगे, मुनि बन वन विचरेंगे।
कर्म नाश फिर करेंगे, सिद्ध शिला पर रहेंगे।।

\- अभिषेक जैन, रोहिणी, दिल्ली

खेल के नियम

1. सबसे पहले गत्ते का एक गोल टुकड़ा लें। उसकी एक ओर लाल और दूसरी ओर हरा रंग भर लें या आप इसके लिये सिक्के का भी प्रयोग कर सकते हैं और खेलने के लिये एक-एक गोटी ले लें। 2. इसमें एक साथ दो व्यक्ति खेल सकते हैं।

कैसे खेलें - दोनों खिलाड़ी अपनी-अपनी गोटी सबसे पहले खाने (Block) ब्लॉक में रखें और बारी-बारी से अपना पासा (गत्ते का गोल टुकड़ा या सिक्का) फेकें। अगर पासे में हरा रंग ऊपर की ओर है तो गोटी दो खाने आगे चलेगी और लाल रंग ऊपर की [illegible] गोटी एक [illegible] के लिये कुछ खानों में चित्र बने हुये हैं। अगर आपकी गोटी किसी

आप जीत गये

START प्रारंभ

कहानी लिखो - प्रतियोगिता

नीचे दिये चित्रों के आधार पर प्यारी सी कहानी लिखकर भेजिये, जो जैन धर्म पर आधारित हो।

प्रथम पाँच विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार दिये जायेंगे और सर्वश्रेष्ठ कहानी को चहकती चेतना में प्रकाशित किया जायेगा। शब्द सीमा - अधिकतम 500 शब्द

आयु वर्ग - 5 वर्ष से 15 वर्ष तक / कहानी भेजने की अंतिम तिथि - 15 मई 2017

कहानी स्वयं के विचार / कल्पना के आधार पर होनी चाहिये किसी शास्त्र की नहीं ।

कोई लाख करे चतुराई, करम का लेख मिटे न रे भाई

बिहार की राजधानी पटना में कुछ दिन पूर्व जन्मे इस बालक की मनुष्य पर्याय यूं ही निकल गई। माँ शहनाई से जन्मे इस बालक का शरीर एलियन की तरह थी, पूरे शरीर की चमड़ी मोटी और सूखी थी और यह बालक मात्र 7 दिन बाद ही मर गया।

हरियाणा के यमुना नगर में एक महिला ने एक बालक को जन्म दिया जिसके दो सिर थे। बूड़िया चूंगी गांव की रहने वाली यह महिला के इस बेटे के हाथ, पैर तो बस सामान्य थे पर सिर दो थे।

7 वर्ष की शेर्लोट गारसाइड दुनिया की सबसे छोटी और सबसे कम वजन की लड़की है। अपने वीडियो से वह प्रतिवर्ष 20 लाख रुपये कमाती है।

कैसिडी हूपर बिना आंख और नाक पैदा हुई थी। परन्तु अपनी कुछ विशेषताओं के कारण से वह अपने वीडियो यू ट्यूब पर अपलोड कर प्रतिवर्ष 26 लाख रुपये कमा लेती है।

ये है मृत्युंजय दास को ये बच्चा मात्र 11 महीने का है एक Hydrocephalus बीमारी के वजह से इसके सिर में 5 लीटर तरल पदार्थ भर गया। जिसके कारण इसके सिर का आकार बड़ा हो गया है।

जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनायें

जन्म-मरण के अभाव की भावना में जन्म दिवस मनाने की सार्थकता है।

मंगल भाव हों आपके, जन्म मरण नश जाय।
ईर्या शिवगमन हो, आतम दृष्टि पाय।।

ईर्या -विराग शास्त्री, जबलपुर 27 अप्रेल 2017

शब्दों से गाथा बने,गाथा से हो ग्रन्थ।
जैन धर्म मंगल मिला, मार्ग मिला निर्ग्रन्थ।।

गाथा सौरभ जैन, इंदौर 7 अप्रैल 2017

स्वागत है जिनशासन जिन कुल में, जिनवाणी की छांव रहो।
सीता सोमा अन्जना बन, कर्म कलंक को शीघ्र हरो।।

ईहा- धर्मेन्द्र शास्त्री, कोटा राज. 15 फरवरी 2017

मानव कुल और जिनशासन पाने की प्रसन्नता व्यक्त कर रही है। आचार्य धरसेन सिद्धान्त महाविद्यालय कोटा के प्राचार्य श्री धर्मेन्द्र शास्त्री और श्रीमती नेहा जैन के यहाँ दिनांक 14 फरवरी को एक पुत्री का जन्म हुआ। जन्म के 1 घंटे बाद का बच्ची का निश्छल मुस्कान का मधुरिम फोटो।

जन्म तुम्हारा मंगलमय है, हरली जग की पीर ।
न्याय, नीति और धर्म से, आगे बढ़ना वीर ।।

वीर मयंक जैन, सागर 19 अप्रैल 2017

अर्हम में अरहन्त हैं, कोटि नमन् है आज ।
यही भावना जन्मदिवस पर, पाना शिवपुर राज ।।

अर्हम अरुण जैन, जबलपुर 18 मई 2017

जन्म दिवस पर यह भावना भाईये।

जल्दी से भगवान बनो तुम। अब अपना कल्याण करो तुम ।
जन्म-मरण का नाश करो तुम।सिद्ध शिला पर वास करो तुम ।
देव-शास्त्र-गुरु पास रहो तुम।पाप भाव से दूर रहो तुम ।
भेद ज्ञान अभ्यास करो तुम।सिद्ध शिला पर वास करो तुम ।।

दोहरा मापदण्ड.......

श्रुति! क्या बात है ..? बहुत परेशान दिख रही हो..।

क्या बताऊँ देशना! प्रतीक आजकल बहुत बिगड़ गया है, हर बात में जिद करता है, कभी चाट, कभी बर्फ का गोला, कभी आईसक्रीम खाने की जिद करता है। आजकल मोहल्ले के लड़कों को गाली भी देने लगा है। बात तो बिल्कुल नहीं मानता....।

श्रुति ! मेरा बेटा सुलभ भी ऐसा ही हो गया था। एक दिन में मैं मंदिर गई तो वहाँ पाठशाला चल रही थी। मैं सुलभ को लेकर वहीं बैठ गई। मुझे पाठशाला में बहुत अच्छा लगा। अब तो सुलभ रोज पाठशाला जाने लगा है और जिद भी नहीं करता। पाठशाला के अच्छे वातावरण और संस्कारों ने उसे बचा लिया।

अरे वाह! तब तो मैं भी आज से ही अपने प्रतीक को पाठशाला लेकर जाऊँगी।

(प्रतीक प्रतिदिन पाठशाला जाने लगता है। उसे वहाँ बहुत सारी बातें सीखने मिलीं। अपने आप उसमें परिवर्तन दिखने लगा। अब वह जिद भी नहीं करता था)

एक दिन पाठशाला से आने के बाद अपनी माँ से बोला -

मम्मी! आज से मैं आलू-प्याज नहीं खाऊँगा और पानी भी छानकर पीऊँगा। आज से मैं रात्रि भोजन भी नहीं करूँगा और बाजार में चाट बन्द और आईसक्रीम और बर्फ का गोला भी बन्द और हाँ! पाठशाला में भैया कह रहे थे कि बाजार के केक में अण्डा होता है तो आज से केक भी नहीं खाऊँगा।

पर बेटा! ऐसे कैसे नियम ले लिया? तुम्हारी अभी उम्र नहीं है नियम लेने की...।

मम्मी? पाप छोड़ने की कोई उम्र होती है क्या ? पाप तो पाप है वह तो हमेशा ही छोड़ने लायक होता है।

अब तुम मुझे सिखाओगे क्या ...? तुम समझते नहीं हो ....नियम समझदारी से लिये जाते हैं। अभी तुम छोटे हो, स्कूल की पिकनिक, दोस्तों की बर्थडे पार्टी में क्या करोगे...? और जब तुम बड़े हो जाओगे तो बाहर होस्टल में कैसे रहोगे, नौकरी पता नहीं कैसी मिलेगी फिर तुम कैसे करोगे ?

क्या करूँगा ...? यह तो पता नहीं। लेकिन मुझे लगता है हमारे वीतराग भगवान ने इन्हें पाप बताया है और सदाचारमय जीवन बताया है तो हमें उनकी बात मानना चाहिये....।

बड़ा पण्डितों जैसी बातें कर रहा है। मैंने कह दिया ना अभी कोई नियम नहीं लेना.... बस...। (प्रतीक आश्चर्य से अपनी माँ की ओर देख रहा था समझ नहीं पा रहा था कि मम्मी की बात मानूँ या जिनवाणी की माँ......)

- श्रीमति श्वेता सौरभ जैन, पल्हरनगर, इन्दौर

नोटों के फेर में स्वास्थ्य से खिलवाड़ .....

हमारी दिनचर्या में धन का बहुत महत्व है। हम दिन में न जाने कितनी बार नोटों को हाथ से गिनते हैं और लेन-देन में प्रयोग करते हैं। पर कमाई के फेर में कहीं आप अपने स्वास्थ्य से खिलवाड़ तो नहीं कर रहे। कई लोग नोटों को हाथ लगाकर बिना हाथ धोये भोजन कर लेते हैं या कुछ खाते रहते हैं। खासकर दुकान में विक्रय करते हुये भोजन करना या कुछ खाना सामान्य बात है।

क्या आप जानते हैं कि आपके पास आया हुआ न जाने कितने हाथों से होता हुआ आपके पास आया है। उसमें असंख्य बैक्टीरिया होते हैं जो हमारे स्वास्थ्य पर घातक प्रभाव डालते हैं। जितना छोटा नोट होगा उतना ज्यादा बैक्टीरिया का खतरा होगा। छोटा नोट हर वर्ग के पास होता है इसलिये ज्यादा हाथों से गुजरता है। इससे ज्यादा बैक्टीरिया होने की संभावना होती है।

नोट में पाये जाने वाले बैक्टीरिया से एच 1, एन 1, एच 3, एन 2 संक्रमण यानि स्वाइन फ्लू होने का खतरा होता है । यू टी आई अर्थात् यूरिनरी ट्रैक इन्फेक्शन, निमोनिया, लंग इन्फेक्शन, गले का संक्रमण, सांस की बीमारियाँ, बुखार आदि होने की संभावना होती है।

नोट इस्तेमाल करने के बाद भोजन करने या कुछ भी खाने के पहले साबुन से अच्छी तरह हाथ धोना चाहिये। उंगलियों में थूक लगाकर नोट गिनना खतरनाक हो सकता है, इससे बैक्टीरिया सीधे मुंह में जाकर शरीर में कोई बीमारी पैदा कर सकते हैं इसलिये नोट गिनने के लिये पानी का प्रयोग करें।

सावधानी ही सुरक्षा है।

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर को प्राप्त सहयोग

1100/- कोलकाता निवासी श्री विनयजी पाण्ड्या के स्वर्गवास पर उनकी धर्मपत्नी एवं सर्वोदय फाउन्डेशन की प्रारम्भ से सहयोगी श्रीमति साधना पाण्ड्या की ओर से प्राप्त। दिवंगत आत्मा के भव विराम की मंगल कामना।

5000/- मुम्बई निवासी श्री किरण गाला के पुत्र देवांग गाला शास्त्री का शुभ विवाह कोटा निवासी श्री सुरेन्द्र कुमारजी की सुपुत्री श्रेया के संग दिनांक 17 फरवरी को संपन्न होने के अवसर पर प्राप्त।

3100/- कोटा पण्डित श्री कमलजी बोहरा आगामी प्रकाशन हेतु प्राप्त।

जिनवाणी संरक्षण केन्द्र दिसम्बर तक के लिये बन्द

जीर्ण-शीर्ण जिनवाणी और पुरानी पत्र-पत्रिकाओं का संग्रहण करने हेतु जबलपुर में स्थापित जिनवाणी संरक्षण नियमानुसार दिसम्बर तक के लिये बन्द कर दिया गया है। जिन्हें जीर्ण-शीर्ण जिनवाणी अथवा पुरानी पत्र-पत्रिकायें भेजना हो वे अभी एकत्रित करके रखें और जनवरी 2018 में भेजें। उसके पूर्व हम इसे स्वीकार करने में असमर्थ हैं।

संचालक -
जिनवाणी संरक्षण केन्द्र,
जबलपुर सम्पर्क :
9300642434

मंगल संदेश स्टीकर्स उपलब्ध

हमें प्रतिदिन हर समय अपने आत्मकल्याण की भावना होती रहे इसे भावना से निरन्तर प्रेरणा देने के उद्देश्य से आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर तैयार किये गये हैं।

एक सेट में 15 स्टीकर्स का सेट मात्र 20 रु. में उपलब्ध हैं। इसकी परिकल्पना श्री विराग शास्त्री द्वारा की गई है।

चहकती चेतना के सदस्य ध्यान दें

चहकती चेतना के सदस्य क्रमांक 2145 से 2164 तक के की सदस्यता अवधि समाप्त हो गई है अतः उन्हें पत्रिका आगे भेजना संभव नहीं होगा। साथ ही सदस्य क्रमांक 2165 से 2316 तक की सदस्यता अवधि शीघ्र समाप्त होने वाली है। अतः पत्रिका प्राप्त करने के इच्छुक साधर्मी सदस्यता राशि हमारे बैंक खाते में जमा करके अथवा चैक या ड्राफ्ट द्वारा भेजें।

बैंक का नाम - पंजाब नेशनल बैंक, शाखा - फव्वारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्रमांक - 1937001010106
IFSC No. : PUNB0193700
सदस्यता शुल्क - 400/- रु. तीन वर्ष हेतु 1200/- रु. दस वर्ष हेतु
राशि जमा करके अपना सदस्यता क्रमांक अथवा अपना पूरा पता हमें 9300642434 पर SMS या What's App करें।

जैनों का इतिहास ऐसा भी ....

जैनों पर प्रारम्भ से अत्याचार होते रहे हैं। मुस्लिमों के साथ अनेक हिन्दू राजाओं ने जैन संस्कृति नष्ट करने के लिये अनेक उपाय किये।

सातवीं शताब्दी में मदुरै का राजा पल्लव महेन्द्र बर्मन और पाण्ड्य नेदुमारण थे। परन्तु ब्राह्मण मत के अप्पर और शैव मत के सम्बन्धर ने राजाओं को जैन धर्म का त्याग कराके अपने मत में परिवर्तित कर दिया। बाद में राजामारवर्मन अवनिशूलमणि ने भी जैन धर्म त्यागकर शैवमत अंगीकार कर लिया। पाण्ड्य राजा ने तिरुज्ञान और सम्बन्धर के उपदेश से जैन विद्वानों की हत्या करवा दी और 8000 जैनों को फांसी पर लटकवा दिया। इनके आतंक कारण दसवीं शताब्दी तक जैन धर्म का प्रभाव बहुत कम हो गया। अनेक जैनों को दण्ड देकर हिन्दू धर्म में दीक्षित करवा दिया गया। परन्तु उन्होंने अपना आचार-विचार नहीं छोड़ा। इसी कारण तिरुपत्तिकुणरम् का नाम जिनकांची हो गया। राजाओं के विरोध के बाद भी जैनधर्म की पल्लि अर्थात् पाठशालायें स्थापित होती रहीं और नये-नये जैन मंदिर बनते रहे। यह सब समर्पित जैन व्यापारियों के सहयोग से संभव हुआ। जैनधर्म के विरोधियों द्वारा अत्याचार होते रहे, यहाँ तक जैन महिलाओं के साथ बलात्कार तक हुये।

हिन्दू धर्म के दो मत शैव और वैष्णव आपस में बहुत लड़ते थे परन्तु जैनों के साथ लड़ते समय दोनों एक हो जाते थे। तेवारं नाम के शैव ग्रन्थ में जिन-जिन मंदिरों का उल्लेख किया गया है वे सभी जैनों या बौद्धों के निवास, मंदिर या पाठशाला थे। इन्हें छीनकर बदल दिया गया।

जैन समाज के लोगों ने बहुत यातनायें सहीं। इनके साथ हिंसा, फांसी, लूटपाट, झगड़े तो सामान्य बात थी। शैव पेरयिपुराणं में स्पष्ट उल्लेख है -

अन्य वण्णं आरुरिल ..... पन्नु पालुप्यल्लिकलु परित्त क्कुलंसूल करे पडुत्तु

अर्थात् श्रमणों के कई घर, धर्मशाला, पाठशाला आदि छीनकर बड़ा तालाब बनाया गया था।

तैलये आगे अरुप्पदे करूमं कण्डाय शैव- आलवार तिरुप्पाडल ग्रन्थ

इसका मतलब है कि जैनियों के सिर काटो - यही तुम्हारा काम है। इसका प्रमाण यह है कि पेरियपुराणं तिरुविलैयार पुराण आदि ग्रन्थों में बताया है कि आठ हजार जैन साधुओं को शूली पर चढ़ाकर मार दिया गया। दक्षिण मथुरा के शिव मंदिर की दीवार पर इस घटना का चित्र बनाया गया है। हर साल शैव लोग इस घटना की स्मृति में दस दिन उत्सव बनाकर नाटक करते हैं। चोल देश के परैयार में, कांजीपुर के पास तिरुवोत्तूर में भी जैनों को बहुत परेशान किया गया। यहाँ तक कि जैनों को हाथी के पैरों के नीचे कुचलकर मार डाला गया।

बाद में गंगवंश का राजा जैन मुनिराजों का उपदेश सुनने आता था तो

उसके साथ प्रजा भी आती थी और एक बार के उपदेश को सुनकर ही लगभग सभी जैनी बनकर जाते थे। होयसल वंश भी जैनधर्म में दीक्षित हो गया था। चालुक्य, चोल, कदम्बवंशी भी जैन राजा हुये पर उन्होंने कभी जैन धर्म न मानने वाली अन्य प्रजा को परेशान नहीं किया । न ही उनके मंदिरों को नुकसान पहुँचाया।

सन् 1178 के समय वेंकटपति नायकन नामक छोटा सा राज्य था। यहाँ तेलगू वंश का शासन था। इनका विचार था कि ऊंचे कुल वालों के परिवार की लड़की से शादी करना चाहिये। इसलिये उन्होंने ब्राह्मणों को बुलाकर शादी के लिये लड़की मांगी। उनकी तेलगु वंश को अपनी बेटी देने की इच्छा नहीं थी परन्तु वे राजा को मना नहीं कर सकते थे। इसलिये उन्होंने चालाकी से कहा कि श्रमण माने जैन हमसे भी ऊंचे हैं, आप उनसे एक लड़की ले लीजिये। वह राजा मूर्ख और अन्यायी था। उसने वैसे ही जैनियों से लड़की मांगी। जैन भी राजा को लड़की देने को तैयार नहीं थे। उन्होंने सोचा कि यदि वे अभी मना करेंगे तो राजा आतंक मचायेगा तो उन्होंने आपस में चर्चा करके एक सप्ताह बाद निश्चित स्थान पर आने को कहा और कहा - वहाँ आपको लड़की मिल जायेगी। फिर निश्चित स्थान पर जैनियों ने एक घर को खाली किया और वहाँ दीपक जलाये और एक कुतिया को नहलाकर उसे तिलक लगाकर उसे बांधकर चले गये। जब राजा ने वहाँ आकर कुतिया को देखा तो उसे बहुत क्रोध आया।

राजा ने इसे अपना अपमान समझा और जैनियों की हत्या करना शुरु कर दिया। दस जैनियों के सिर काटकर उसे एक के ऊपर जमाता था। इस तरह दस जैनियों को मारा जाता था और उन्हें एक आदमी अपने सिर पर ढोता था। उसे (सुमन्तान तले पत्तु) अर्थात् दस सिर ढोने वाला कहा जाता था। उस समय हजारों जैन मारे गये। जैनियों ने जानबूझकर यह भयानक समस्या को आमंत्रण दिया था। उस समय में सारे जैन जनेऊ पहनते थे, बहुत सारे जैन जनेऊ फेंककर शैव बन गये। धर्म परिवर्तन करने वाले जैनियों को नैनार कहा जाता था। कुछ जैन मुसलमान बन गये।

उसी समय जिंजी के पास बेलूर में आचार्य वीरसेन नाम के मुनि तटाक के किनारे तप कर रहे थे। राजा के सैनिक उन्हें पकड़कर राजा के पास ले गये। उस समय राजा पुत्र के जन्म की खुशी मना रहा था इसलिये मुनिराज को छोड़ दिया और मुनिराज वहाँ से श्रवणबेलगोला चले गये।

उसी समय तायनूर ग्राम में गांगेय उडैयार नाम के एक बड़े व्यक्ति रहते थे। वे वातावरण शांत होने के बाद श्रवणबेलगोला गये और आचार्य वीरसेन को वापस लेकर आये। जो लोग धर्म परिवर्तन कर शैव बन गये वे वापस जैन बन गये। पर कुछ लोगों ने वापस जैन बनने से मना कर दिया, उनके वंश के लोग आज भी उडैयार जैन कहलाते हैं। राजा के डर से जो जैन मुसलमान बन गये थे वे केरल के आसपास जैन अलाउद्दीन या नैनार मुहम्मद लिखते हैं।

शेष अगले अंक में ....

क्या आप भी अपना मोबाइल बार-बार चेक करते हैं....... मत कीजिये ऐसा ...

क्या आप भी अपना मोबाइल बिना किसी वजह से बार-बार चेक करते हैं...कभी आपका फोन बन्द हो जाये तो क्या आपको बैचेनी होती है ? सच मानिये... यदि ऐसा है तो आप डिप्रेशन का शिकार हो सकते हैं। अमेरिकन साइकोजिकल एसोसिएशन के एक सर्वे में सामने आया है कि 86 प्रतिशत युवा बार-बार अपना फोन चेक करते हैं। इससे वे डिप्रेशन के शिकार हो रहे हैं। साइकोलॉजिस्ट डॉ. आर. एन साहू कहते हैं कि यदि कोई व्यक्ति बार-बार अपना मोबाइल बिना वजह चेक करता है तो उसे तुरन्त डॉक्टर की सलाह लेना चाहिये क्योंकि यह आदत आगे चलकर किसी बड़ी बीमारी का कारण हो सकती है।

- मोबाइल के अधिक उपयोग से आंखों और दिमाग पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है और आंखें कमजोर होती हैं और निर्णय लेने की क्षमता प्रभावित होती है।
- बार-बार मोबाइल चेक करने आपको तनाव पैदा हो सकता है। नोटिफिंकेशंस के साथ मैसेज के इंतजार में तनाव बढ़ता है।
- मोबाइल पर आने वाली अनाश्यक जानकारियाँ हमारे मन का बोझ बढ़ाती हैं। भोजन के समय, सोते समय, स्वाध्याय के समय फोन का प्रयोग नहीं करना चाहिये।
- घर के अन्य कार्य और परिवार के वरिष्ठजनों की आज्ञा का विशेष ध्यान रखें। आज अनेक परिवार मात्र मोबाइल के अधिक प्रयोग के कारण बिखर रहे हैं।
- रात में सोते समय और प्रातः उठकर तुरन्त माबाइल चेक नहीं करना चाहिये । यह समय स्वयं के लिये होता है । मन को भी आराम का समय देना चाहिये।
- आवश्यक कार्य हो जाने के बाद मोबाइल का प्रयोग नहीं करना चाहिये। छोटी-छोटी संख्याओं को जोड़ने का काम दिमाग से ही कर लेना चाहिये।

बिस्तर पर सोने के समय मोबाइल का प्रयोग न करें वरना आपकी नींद पूरी न होने के

गेजेट्स

आज युवाओं के लिये प्राणों से बढ़कर हो गये हैं..

तकनीक के अत्याधिक प्रयोग ने हमारी स्मृति कमजोर कर दी है। गेजेट्स पर हद से ज्यादा निर्भरता हो गई है। युवाओं को लेकर हुये आनलाईन सर्वे में 70 प्रतिशत युवाओं का कहना था कि वे अपने गैजेट्स के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते । इस पराधीनता ने मनुष्य के दिमाग पर खतरनाक असर डाला है। बैंक एकाउन्ट नम्बर, पासवर्ड, सम्बन्धियों के जन्मदिवस आदि महत्वपूर्ण तिथियाँ और जानकारियाँ हमारी मेमोरी से बाहर हो गईं हैं। जापान की होक्काइडो यूनिवर्सिटी में हुये एक शोध के अनुसार 20 से 35 की आयु वाले हर 10 युवाओं में से दो युवाओं को मेमोरी लॉस या भूलने की बीमारी है।

इस तरह की कई समस्यायें आ रहीं हैं -

गर्दन और कंधों में दर्द - स्मार्ट फोन के प्रयोग के दौरान घंटों गर्दन झुकाकर स्क्रीन देखने वाले युवाओं को कंधे और गर्दन में दर्द की समस्या हो रही है। झुककर चैट करना, मैसेज करना, गाने सुनने से ये समस्यायें पैदा हो रहीं हैं।

उंगलियों में सुन्नपन - की पैड के अधिक इस्तेमाल के कारण उंगलियों और अंगूठे में सुन्नता या संवेदन शून्यता की शिकायत देखने को मिल रही है।

ड्राई आई सिंड्रोम - अंधेरे में घंटों चैट करना, मैसेज, फोटो, गेम खेलने आदि से आंखें कमजोर हो रही हैं। लगातार गैजेट्स के प्रयोग के कारण आंखों में ड्राईनेस की समस्या बढ़ती जा रही है। इसे ही ड्राई आई सिंड्रोम कहा जाता है। इसके साथ ही आखों में शुष्कपन, नजर में धुंधलापन, सिरदर्द जैसे गंभीर बीमारियों की समस्या बढ़ती जा रही है।

बहरापन - कानों में लगातार ईयरफोन लगाने से बहरापन या कम सुनाई देने की समस्या भी लगातार बढ़ रही है।

दिल पर असर - ईसीजी के दौरान जैसे इलेक्ट्रिक मैग्नेटिक सिग्नल कुछ समय के लिये हृदय की गति को नियंत्रित करता है वैसे ही मोबाइल के रेडिएशन का असर सीधे दिल की धमनियों पर पड़ता है।

मोटापा और डायबिटीज - एक स्थान पर लगातार गेम खेलने और खेलते समय कुछ खाते रहने से शरीर की कैलोरी खपत नहीं होती बल्कि अतिरिक्त कैलोरी मिलती है जिससे मोटापा और डायबिटीज जैसी बीमारी होती हैं।

इतना सब जानने के बाद भी अब आप सावधान नहीं होंगे तो निःसन्देह प्रतिकूलतायें आपका इन्तजार कर रहीं हैं...।

कहान शिशु विहार की
प्रगतिशील गतिविधियाँ

सोनगढ़ में संचालित कहान शिशु विहार की गतिविधियाँ अनवरत जारी हैं। इसमें धार्मिक कक्षाओं का नियमित संचालन, विद्यालय की पढ़ाई के साथ अन्य कार्यक्रम प्रसंग अनुसार संपन्न हुये। इसकी संक्षिप्त जानकारी -

- विद्यालय के नियमित कार्यक्रम के अन्तर्गत जैन धर्म के तीर्थों और संस्कृति का परिचय करवाने के उद्देश्य से जनवरी माह में जयपुर और अजमेर के प्रमुख जिनमंदिरों और तीर्थों की दर्शन यात्रा का आयोजन किया गया।
- सामाजिक गतिविधियों के परिचय करवाने के उद्देश्य से सीहोर में स्थित कला प्रदर्शनी का अवलोकन कराया गया।
- भारत के गणतंत्र दिवस पर ज्ञान का घोंसला नामक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसके अन्तर्गत श्री अनंतराय ए. सेठ के करकमलों द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया और विद्यार्थियों द्वारा सलामी दी गई। रात्रि में विद्यार्थियों द्वारा देश को समर्पित सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। इस कार्यक्रम में श्री नेमिषभाई शाह, श्री केतनभाई शाह, श्री हितेनभाई ए. सेठ, श्री राजेशभाई जवेरी, श्री आगम ए.सेठ के साथ समस्त ट्रस्टियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।
- 2 फरवरी 2017 को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान इसरो में कार्यरत श्री स्वानुभव शास्त्री का विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।
- मार्च माह में दसवीं कक्षा के छात्रों का विदाई कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें सभी 9 छात्र पूरे पाँच वर्ष के अध्ययन के पश्चात् विदाई दी गई और उनके मंगल भविष्य के लिये शुभकामनायें दीं गईं।

इन समस्त कार्यक्रमों विद्यालय के निदेशक श्री सोनू शास्त्री, अधीक्षक द्वय श्री आतम शास्त्री, श्री अनेकान्त शास्त्री और श्रीमति शिखा सोनू जैन का पूर्ण समर्पण रहा।

आचार्य कुन्दकुन्द की तपोभूमि पोन्नूरमलै में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं विधान संपन्न

आचार्य कुन्दकुन्द की तपोभूमि पोन्नूरमलै में प्रतिवर्ष की भांति आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं पण्डित अभयकुमारजी द्वारा रचित सार समयसार मण्डल विधान एवं सार प्रवचनसार मण्डल विधान का कार्यक्रम संपन्न हुआ। दिनांक 21 फरवरी से 26 फरवरी 2017 तक आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति सेन्टर में आयोजित इस कार्यक्रम में प्रातःकालीन व्याख्यानमाला में क्रमशः श्री विराग शास्त्री, पण्डित श्री गुलाबचन्दजी बीना, पण्डित श्री जयकुमारजी कोटा, पण्डित श्री प्रमोदकुमारजी मकरोनिया के स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् जिनेन्द्र प्रक्षाल और विधान पूजन का कार्यक्रम हुआ। प्रतिदिन पूज्य गुरूदेवश्री के समयसार की 181 से 183 गाथा के सीडी प्रवचन के पश्चात् डॉ. राकेशजी द्वारा गुरुदेवश्री के प्रवचन पर विशेष चर्चा हुई । प्रतिदिन तीनों समय के व्याख्यानमाला के क्रम में पण्डित अभयकुमारजी द्वारा उभयाभासी मिथ्यादृष्टि विषय पर और प्रो. डॉ सुदीप जैन द्वारा आचार्य कुन्दकुन्द के जीवन के विशिष्ट पहलुओं, उनके साहित्यिक अवदान, और अन्य ऐतिहासिक तथ्यों की प्रामाणिक चर्चा प्रस्तुत की गई।

इस कार्यक्रम में देश 7 प्रान्तों के 180 साधर्मियों ने सहभागिता की। अंतिम दिन तीर्थधाम मंगलायतन के अध्यक्ष श्री अजितप्रसादजी एवं आत्मार्थी ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री आदीशजी जैन की मुख्य आतिथ्य में सभी विद्वानों का आभार व्यक्त किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री अनन्तराय ए. सेठ के मार्गदर्शन और विराग शास्त्री, जबलपुर के कुशल संयोजन में सानन्द संपन्न हुये।

- राजीव जैन - प्रबंधक

गुरुदेवश्री के प्रवचन सुनने हेतु प्रोजेक्टर / टीवी वितरण योजना

मुमुक्षु संस्थाओं द्वारा संचालित स्वाध्याय भवनों में आध्यात्मिक सत्पुरुष पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामीं के प्रवचनों को सुनने के लिये श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विलेपारले मुम्बई द्वारा प्रोजेक्टर/टीवी/लेपटॉप वितरण योजना प्रारम्भ की गई है। इसके अन्तर्गत संस्था को प्राप्त आवेदनों पर निर्धारित नियमों और प्रक्रिया के पश्चात् आवश्यकता के अनुसार मुमुक्षु संस्थाओं को प्रोजेक्टर/टीवी/लेपटॉप निःशुल्क प्रदान किये जायेंगे। जिन संस्थाओं को इन साधनों की आवश्यकता हो वे हमसे संपर्क कर सकते हैं। सम्पर्क सूत्र : विराग शास्त्री संयोजक 9300642434 एवं श्री शैलेष भाई शाह मुम्बई फोन : 022-26130820 email- info@vitragvani.com

बच्चों और युवाओं में धर्म रुचि के लिये मुम्बई में हुआ अभिनव प्रयोग

वर्तमान समय की महत्वकांक्षाओं और प्रतिस्पर्धा के दौर में समाज के बच्चों में जिनधर्म के संस्कार बनाये रखना अतिदुष्कर कार्य है। बच्चों को जिनधर्म के सिद्धान्तों के प्रति आकर्षित करने के लिये मुम्बई महानगर के विले पारला में एक नवीन कार्यक्रम किया गया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट, पार्ला-सांताक्रुझ द्वारा नव निर्मित श्री सीमन्धर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर में एक अभिनव प्रयोग के रूप में दिनांक 5 फरवरी को एक दिवसीय बाल-युवा संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस प्रथम प्रयोग में संस्था के आमंत्रण पर मुम्बई के दादर, माहिम, घाटकोपर, भायन्दर, मलाड आदि लगभग 18 उपनगरों के लगभग 700 बच्चों और युवाओं ने उत्साह से सहभागिता की। कार्यक्रमों की श्रृंखला में सर्वप्रथम प्रातः 7 बजे जिनेन्द्र दर्शन एवं सीमन्धर भगवान की भावपूर्ण पूजन हुई। पूजन के आधार से प्रश्न-मंच और इसके बाद पूज्य गुरुदेवश्री का मांगलिक प्रवचन हुआ। प्रवचन के आधार पर हुये प्रश्न-मंच में 40 मिनिट तक बच्चों के मुख से आशातीत उत्तर सुनकर सभी सभी आश्चर्यचकित रह गये। सभी उत्तर देने वाले बच्चों को आकर्षक पुरुस्कार दिये गये। पधारे हुये बच्चों में पाठशाला में आने वाले बच्चों के अतिरिक्त पाठशाला न आने वाले बच्चे भी शामिल थे। कार्यक्रम से उन्हें भी पाठशाला आने की प्रेरणा मिली।

दोपहर में जिनमंदिर मंदिर के परिसर के चित्रों का दर्शन करवाकर उनकी विशिष्ट घटनाओं और कथाओं का परिचय करवाया गया। इसके पश्चात् विशेष रूप से तैयार निगोद से निर्वाण तक की यात्रा की कक्षा प्रोजेक्टर पर विभिन्न चित्रों द्वारा ली गई। बालकों में जिनधर्म के प्रति समर्पण की भावना जाग्रत करने हेतु अकलंक-निकलंक की कथा सुनाई गई। शिविर की समापन की बेला में पार्ला मंदिर के ट्रस्टियों द्वारा समस्त पाठशालाओं के अध्यापकों एवं कार्यकर्ताओं एवं बच्चों को प्रोत्साहन भेंट दी गई। यह कार्यक्रम के ट्रस्ट के समर्पित कार्यकर्ताओं द्वारा सानन्द संपन्न हुये।

- अक्षयभाई दोसी, मुम्बई

ग्रीष्मकालीन बाल संस्कार शिविर

दिनांक 02 अप्रेल से 4 अप्रेल 2017 - विद्वत् गोष्ठी एवं प्रवेश शिविर, कोटा

दिनांक 28 अप्रेल से 6 मई 2017 - देवलाली

दिनांक 07 मई से 14 मई 2017 - जबलपुर

दिनांक 23 मई से 30 मई 2017 - औरंगाबाद

दिनांक 7 जून से 16 जून 2017 - सामूहिक बाल संस्कार शिक्षण शिविर
संचालन - भिण्ड मण्डल

आचार्य कुन्दकुन्द की तपोभूमि पोन्नूरमलै में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं विधान संपन्न

आचार्य कुन्दकुन्द की तपोभूमि पोन्नूरमलै में प्रतिवर्ष की भांति आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं पण्डित अभयकुमारजी द्वारा रचित सार समयसार मण्डल विधान एवं सार प्रवचनसार मण्डल विधान का कार्यक्रम संपन्न हुआ। दिनांक 21 फरवरी से 26 फरवरी 2017 तक आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति सेन्टर में आयोजित इस कार्यक्रम में प्रातःकालीन व्याख्यानमाला में क्रमशः श्री विराग शास्त्री, पण्डित श्री गुलाबचन्दजी बीना, पण्डित श्री जयकुमारजी कोटा, पण्डित श्री प्रमोदकुमारजी मकरोनिया के स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् जिनेन्द्र प्रक्षाल और विधान पूजन का कार्यक्रम हुआ। प्रतिदिन पूज्य गुरूदेवश्री के समयसार की 181 से 183 गाथा के सीडी प्रवचन के पश्चात् डॉ. राकेशजी द्वारा गुरुदेवश्री के प्रवचन पर विशेष चर्चा हुई । प्रतिदिन तीनों समय के व्याख्यानमाला के क्रम में पण्डित अभयकुमारजी द्वारा उभयाभासी मिथ्यादृष्टि विषय पर और प्रो. डॉ सुदीप जैन द्वारा आचार्य कुन्दकुन्द के जीवन के विशिष्ट पहलुओं, उनके साहित्यिक अवदान, और अन्य ऐतिहासिक तथ्यों की प्रामाणिक चर्चा प्रस्तुत की गई।

इस कार्यक्रम में देश 7 प्रान्तों के 180 साधर्मियों ने सहभागिता की। अंतिम दिन तीर्थधाम मंगलायतन के अध्यक्ष श्री अजितप्रसादजी एवं आत्मार्थी ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री आदीशजी जैन की मुख्य आतिथ्य में सभी विद्वानों का आभार व्यक्त किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री अनन्तराय ए. सेठ के मार्गदर्शन और विराग शास्त्री, जबलपुर के कुशल संयोजन में सानन्द संपन्न हुये।

- राजीव जैन - प्रबंधक

गुरुदेवश्री के प्रवचन सुनने हेतु प्रोजेक्टर / टीवी वितरण योजना

मुमुक्षु संस्थाओं द्वारा संचालित स्वाध्याय भवनों में आध्यात्मिक सत्पुरुष पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामीं के प्रवचनों को सुनने के लिये श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विलेपारले मुम्बई द्वारा प्रोजेक्टर/टीवी/लेपटॉप वितरण योजना प्रारम्भ की गई है। इसके अन्तर्गत संस्था को प्राप्त आवेदनों पर निर्धारित नियमों और प्रक्रिया के पश्चात् आवश्यकता के अनुसार मुमुक्षु संस्थाओं को प्रोजेक्टर/टीवी/लेपटॉप निःशुल्क प्रदान किये जायेंगे। जिन संस्थाओं को इन साधनों की आवश्यकता हो वे हमसे संपर्क कर सकते हैं।

सम्पर्क सूत्र : विराग शास्त्री संयोजक 9300642434 एवं श्री शैलेष भाई शाह मुम्बई फोन : 022-26130820 email- info@vitragvani.com

बोलते चित्र

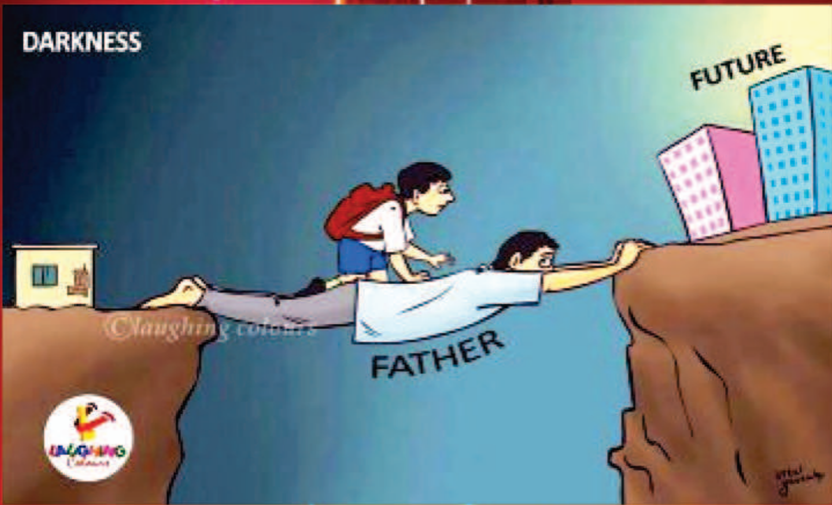
DARKNESS
FUTURE
FATHER
©laughing colours

आओ मै तुमको सड़क पार करा दूँ।
©laughing colours
RS

बाल गीत वीडियो अब **पेन ड्राइव** और **मेमोरी कार्ड** में भी उपलब्ध

बाल एवं युवा वर्ग में जिनधर्म के संस्कारों को प्रवाहित करने में संलग्न संस्था
आचार्य कुन्दकुन्द-सर्वोदय फाउन्डेशन, रजि. जबलपुर की मंगल प्रस्तुति

वीर की बगिया

बाल गीत, कहानियों, कविताओं का अनुपम वीडियो संग्रह

निर्देशन/रचनाकार/ संकलन - विराग शास्त्री, जबलपुर

16 GB
Pan Drive
Memory Card

RS. 550/-

प्राप्ति स्थान

सर्वोदय, 702, जैन टेली कॉम, लाल स्कूल के पास,
फूटाताल, जबलपुर 482002 (म.प्र.)
E-mail : kahansandesh@gmail.com,
Mob. 9300642434

बर्फ के गोले

बर्फ के गोले खालो भैया,
गोले वाला आया ।
रंग बिरंगे गोले खाने,
मन मेरा ललचाया ।।
बिना छने पानी का बनता,
मम्मी ने समझाया ।
अनंत जीव की हिंसा होती,
प्रभुवर ने बतलाया ।।
घर की बनी आइसक्रीम लेकर,
मेरी दीदी आई ।
कभी न खाऊँ बर्फ के गोले,
बात समझ में आई ।।